पाठ 16. नीति के दोहे

दोहे का उद्देश्य

प्रस्तुत दोहे का उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना है। बच्चों को जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने का गुण सिखाना तथा दूसरों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार किया जाए, इस बात की सीख देना है।

दोहे का सारांश

पहले दोहे में बताया गया है कि बुरी संगति सज्जन पुरुष का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। दूसरे दोहे में हमें परोपकार करने की सीख दी गई है। जिस प्रकार पेड़ और नदी दूसरों के काम आते हैं। तीसरे दोहे में कहा गया है कि हमें दूरदर्शी होना चाहिए। हमें आनी वाली परेशानियों के बारे में पहले से ही अनुमान लगा लेना चाहिए ताकि उनसे भलीभाँति निबटा जा सके। चौथे दोहे में कड़वे वचन बोलने से होने वाले नुकसान के बारे में बताया गया है। कड़वे वचन दूसरों के हृदय में कभी न भरने वाले घाव छोड़ जाते हैं। अंतिम दोहे में बताया गया है कि नीच आदमी अपनी प्रकृति कभी नहीं छोड़ता। उसका असली व्यवहार कभी न कभी सामने आ ही जाता है।

अध्यापन संकेत

दोहों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को प्रत्येक दोहे का अर्थ समझाएँ। 'जे रहीम उत्तम......रहत भुजंग।' का भाव है कि सज्जन मनुष्य पर कभी भी बुरे लोगों या बुरी संगति का प्रभाव नहीं पड़ता। जिस प्रकार चंदन अपनी सुंगध नहीं खोता जबकि चंदन के पेड़ पर साँप लिपटे रहते हैं।

- ❖ बच्चों को परोपकार का महत्व समझाएँ।
- ❖ बताएँ कि मीठी वाणी बोलनी चाहिए, कभी किसी से कड़वे शब्द नहीं कहने चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से दोहों की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर दोहों के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।